International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XI, Issue I, January – February 2024 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.991

मध्यप्रदेश के सिवनो जिले के शासकीय महाविद्यालयो के पुस्तकालयो में ई–संसाधन और उसकी उपयोगिता : एक अध्ययन

श्री शंकर शम्भू सोनी[1] एंव डॉ. धर्मवीर सिंह[2]
1. **शोधार्थी पुस्तकालय विज्ञान मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय भोपाल**
2. **प्रोफेसर पुस्तकालय विज्ञान मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय भोपाल**

सारांश–: पुस्तकालय सेवाए शिक्षा प्रणाली का एक प्रमुख घटक हैं। प्रस्तुत शोधपत्र पुस्तकालय में सेवाओं का वर्णन करने का प्रयास करता है। आज का युग प्रतियोगिता का युग है, जहॉ हर देश विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी से लेकर व्यापार तक में अपनी तरक्की चाहता है, जिससे यह विकसित मजबूत शांतिपूर्वक रह सकें। सभी देशों में इस प्रतियोगिता की दौड में शामिल को होकर अपने आप को शीर्ष स्तर पर देखने की होड़ हैं, जिसके लिये उन्हें ज्ञान की आवश्यकता होती हैं। दूसरे शब्दों में नोलेज इज द पावर की तर्ज पर हर देश चाहता हैं कि उसके देश के नागरिक, खासतौर से आने वाली पीढ़ी ज्यादा से ज्यादा शिक्षित एवं प्रोफेशनल हो, जिससे वह भविष्य में देश की उन्नती में सहभागी बने। प्रत्येक व्यक्ति अपने अध्ययन के लिये विभिन्न विषयों की बहुत सारी पुस्तकें एवं जनरलस नहीं खरीद सकता इसके लिये उसे आवश्यकता होती हैं लाइब्रेरी एण्ड इन्फोरमेंशन सांइस सेन्टर्स की जहॉ बहुत सारा ज्ञान हार्डकॉपी एवं सोफटकॉपी के रूप में वैज्ञानिकी तरीके से व्यवस्थित रहता हैं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जाचंना था कि कैसे आधुनिक तकनीकी साधनों का प्रयोग पुस्तकालय सेवाओं को सुदृढ़ और छात्रों को शिक्षा में सहायक बनानें में किया जा रहा है। हमने इन पुस्तकालयों में उपलब्ध आई.सी.टी. उपकरणों की विविधता, उपयोगिता, और प्रभाकिारिता की जांच की, जैसे कि डिजिटल संसाधन, विद्यमान पुस्तकों का ऑलाइन पहुँच, इंटरैक्टिव शैक्षिक सामग्री, और ऑलाइन शोध प्रबंधन। इस अध्ययन में हमनें विभिन्न प्रश्नों पर अध्ययन किया, जैसे कि कौन –कौन से आई.सी.टी. उपकरण उपलब्ध हैं, उनका छात्रों द्वारा प्रयोग, उपयोगिता और प्रभाकिारिता कैसे है, और कैसे इन तकनीकी साधनों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा ही है। हमें छात्रों और पुस्तकालय के कमचारियों से साक्षात्कार भी लिए ताकि हम उनके अनुभव और प्रतिक्रियाओं को समझ सकें। इस अध्ययन के परिणाम स्वरूप, हमनें देखा कि आई.सी.टी. आधारित उपकरणों और सुविधाओं का पुस्तकालयों में व्यापक प्रयोग हो रहा है और यह छात्रों को अध्ययन में सहायक बनानें में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इन तकनीकी साधनों के माध्यम से, छात्र अधिक सामग्री को आसानी से पहुँच सकते हैं, समय प्रबंधन कर सकते हैं और अधिक उच्चतम शिक्षा का लाभ उठा सकते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में स्थित शासकीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयों के आई.सी.टी. आधारित उपकणों और सुविधाओं का प्रयोग की मात्रा और उपयोगिता का मूल्याकंन करनें में महत्वपूर्ण था आरै शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी उन्नति के प्रति उत्साह और सवेंदनशीलता को प्रोत्साहित किया।

मुख्यशब्द : पुस्तकालय, शासकीय महाविद्यालय, सिवनी, ई–लाइब्रेरी, इंटरनेट, लाइब्रेरी ।

प्रस्तावना :–

वर्तमान समय सूचना के युग में प्रस्तुत हो रहा हैं जिसमें अधिकाधिक कार्य सूचना प्राप्ति, सूचना के उपयोग एवं उसके संग्रहण से हैं। मनुष्य का अधिकारिक समय सूचना के उत्पादन एवं उसके उपयोग हेतु प्रयुक्त हो रहा है. वर्तमान में मनुष्य अपने जीवन का एक संपूर्ण हिस्सा शिक्षा के रूप में सूचना प्राप्ति एवं उपयोग हेतु व्यतीत करता है। किसी भी देश में ज्यादा से ज्यादा हो रहे रिसर्च एवं अविष्कारों को उस देश की विकासिता का पैमाना माना गया हैं। साथ ही उस देश में इंजीनियर्स, डॉक्टर्स, वैज्ञानिक व अन्य प्रोफेशनल की संख्या का उस देश की जनता से एक अच्छा अनुपात भी उस देश को विकसित करने में सहायक होती है। देश की जनता का साक्षरता प्रतिशत हमारे देश में साक्षरता मिशन अभियान चला रही हैं, जिनमें जनता को साक्षर करने के लिये विभिन्न तरह की योजनाए, विभिन्न तरह के प्रोजेक्ट भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे हैं, जिससे कि देश में औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा का अधिक से अधिक प्रचार एवं प्रसार हो। इसके अलावा देश में निजी स्कूल/कॉलेज राज्य स्तर एवं केन्द्रिय स्तर पर सरकारी स्कूल/कॉलेज,विभिन्न रिसर्च संस्थाने एवं उच्च स्तरीय तकनीकी कॉलेज सरकार द्वारा संचालित हैं, जिन्हें संचालिय करने के लिये सरकार बहुत सी धनराशि का व्यय करती है। किसी भी तकनीकी/शैक्षिक/रिसर्च संस्थान को संचालित

करने के लिये सबसे मुख्य भूमिका डाटा/सूचना की होती है। बिना डाटा/सूचना के किसी भी तकनीकी/शैक्षिक/रिसर्च संस्थान को चलाना असम्भव कार्य होता है। इसके लिये संस्थानों को अपने संस्थान में डाटा/सूचना बैंक/लाइब्रेरी संचालित करना होता हैं, जिससे रिसर्च व तकनीकी के लिये डाटा कलैक्शन एवं तकनीकी/शैक्षिक/रिसर्च के लिये सूचना को व्यवस्थित रूप से एकत्रित कर उसे उपभोग में लाया जा सकें। उपरोक्त सूचना को वर्तमान एवं भविष्य में प्रयोग हेतु प्रलेख एवं अप्रलेख के रूप में पुस्तकालय में संग्रहित किया जाता है जिससे प्रलेख का संग्रहण उनका अधिकारिक प्रयोग एवं भविष्य में उपयोग हेतु संरक्षण किया जा सके पुस्तकालय एक समाजिक एवं प्रमुख सूचना संस्थान हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में स्थित शासकीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयों के आई.सी.टी. आधारित उपकणों और सुविधाओं का प्रयोग की मात्रा और उपयोगिता का मूल्याकंन और शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी उन्नति के प्रति उत्साह और सवेंदनशीलता को प्रोत्साहित किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह है कि सिवनी जिले में स्थित शासकीय महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में आई.सी.टी. के उपकरण और सुविधाएं कैसे अपनााई जा रही हैं । और इसका छात्रों के शैक्षिक अनुभव में क्या प्रभाव हो रहा है। यह अध्ययन पुस्तकालय सेवाओं में आई.सी.टी. तकनीकों के उपयोग की विभिन्न पहलुओं को जांचने और मापनें का प्रयास किया है। इस अध्ययन के माध्यम से, विभिन्न महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में आई.सी.टी. के उपकरण आरै सुविधाओं के अद्यतन आरै विकास के क्षेत्र में संभावित चुनौितयों और संकेतों की पहचान की जा सकेगी, जो छात्रों की शिक्षा में और उसके शैक्षिक प्रगति में सकारात्मक परिणाम पैदा कर सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :

इस अध्ययन का महत्वपूर्ण कारण यह है कि यह मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में स्थित शासकीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयों में आई.सी.टी. आधारित उपकरणों और सुविधाओं के उपयोग की महत्वपूर्णता को प्रभावित करता है। यह अध्ययन शिक्षा में तकनीकी उन्नति को प्रोत्साहित करने, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देनें, छात्रों को उन्नत प्रौद्योगिकी कौशल प्रदान करनें, शिक्षा में नवाचार को प्रोत्साहित करनें और तकनीकी भविष्य की तैयारी में महत्वपूर्ण योगदान करता है। लाइब्रेरी और ई–रिसोर्स सेंटर के मुख्य उद्देश्य हैं:

1. उपयोगकर्ताओं के लिए किसी भी समय, कहीं से भी संसाधन केंद्र सुविधा उपलब्ध कराना
2. संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों को उनके शोध, शिक्षण, और सीखने की जरूरतों में सहयोग करने के लिए सूचना सेवाएं प्रदान करना
3. विभिन्न प्रारूपों में प्रासंगिक जानकारी की विस्तृत श्रृंखला को पहचानना, हासिल करना और उपलब्ध कराना

सम्बन्धित शोध कार्यो का पुनरावलोकन–:

1. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय (2022), द्वारा अपनी योजना रिपोर्ट में कहा गया कि वर्तमान युग में किसी भी भाषा के विकास के लिये यह आव''यक है कि उसे सूचना प्रौद्योगिकी एवं पुस्तकालय से जोड़ा जाये। तकनीकी के विस्तार और लोगों तक उसकी निरन्तर बढ़ती पहुंच के साथ ही यह आवश्यक हो गया है कि लोगों को उनकी सुविधा एवं साधन अनुसार संसाधन उपलब्ध कराये जाये। इस हेतु नियमों और आदेशों के अनुपालन में दृढ़ता बरते जाने पर भी बल दिया गया।

2. राष्ट्रीय पुस्तकालय, (2022), द्वारा 'म्यूजियम ऑफ द वर्ड' परिकल्पित किया गया, जो कि भाषा, 'शब्द और मूलपाठ के सभी प्रकार के संग्रहों, प्रदर्शो और गतिविधियों का केन्द्र है। इसके भौतिक संसाधनों को इस प्रकार से नियोजित किये जाने हेतु कहा जिससे कि एक ऐसी संकल्पना तैयार हो सके जिसमें हमारे वर्बल और टेक्सचुअल जीवन की समूची प्रक्रिया और समाज, इतिहास तथा संस्कृति को आकार देने में 'शब्द की भूमिका को प्रस्तुत किया जा सके।

3. संस्कृति मंत्रालय, (2021), ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि वर्तमान वैश्विक महामारी ने शिक्षा प्राप्ति और पढ़ाई–लिखायी के लिये सामान्य तौर–तरीकों को प्रभावित किया है। पूरे विश्व के पुस्तकालयों के समक्ष इस बात का विकल्प चुनने में खासी दिक्कते आ रही है। इस स्थिति में भी पुस्तकालयों की आव''यकता महसूस करने वाले सदस्यों तक वर्चुअल रूप में पहुंचने और उनके साथ जुड़ने के लिये वेबिनार और कई गतिविधियाँ आयोजित की गयी, जिसमें भारत की मूल्यवान मूर्त और अमूर्त विरासत को दर्शाने हेतु प्रयास किया गया है।

4. डॉ. वासुदेव भार्मा, (2021), ने अपनी पुस्तक पुस्तकालय एवं समाज में स्पष्ट रूप में एक बेहतर और सशक्त समाज हेतु पुस्तकालय की भूमिका एवं उसके कार्यो को उल्लेखित किया। इनके अनुसार पुस्तकालय, किसी 'शैक्षणिक संस्था के अभिन्न और अनिवार्य अंग में से एक है, जिसके बिना न तो

शैक्षणिक संस्था और न ही सशक्त समाज की कल्पना की जा सकती है।

5. लक्ष्मी, चिन्नासामी (2021), द्वारा ग्रंथालय उपयोगकर्ता की सूचना खोज व्यवहार के अध्ययन के अन्तर्गत उपयोगकर्ता की पुस्तकालय में उपस्थिति, एव ई–स्रोतों के उपयोग से सम्बन्धित उद्देश्य पर कार्य किया। इन्होंने पाया कि उपयोगकर्ता द्वारा पुस्तकालय में संग्रहित एवं पुस्तकालय की सेवाओं से उपयोगकर्ता संतुष्ट पाये। उपयोगकर्ता द्वारा ऑनलाईन सूचना में अधिक रूचि दिखाई गयी और इनके द्वारा सेमीनार, कार्यशाला तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों की माँग की गयी।

6. पुस्तकालय एवं प्रलेखन केन्द्र, नीति आयोग (2020), की रिपोर्ट के अनुसार नीति आयोग के सभी सदस्यों को पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं रिपोर्टो के व्यापक अक्सेस प्रदान करने के लिये कार्य किया गया। इसके अन्तर्गत विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों के पंजीकृत शोध छात्रों को इनहाउस परामर्श की सुविधा प्रदान करने हेतु कहा गया। अपने प्रकाशन के अन्तर्गत आयोग द्वारा डेली डाईजेस्ट, साप्ताहिक बुलेटिल, मासिक बुक अलर्ट्स, मासिक रीसेन्ट लिस्ट ऑफ एडिशन, मासिक टेबल ऑफ कन्टेन्ट्स के अन्तर्गत 484 से अधिक सामग्रियों को शामिल किया गया।

7. प्रलेखन विभाग, नीति आयोग (2020), द्वारा वर्तमान शिक्षा प्रणाली को बदलने की जरूरत को ध्यान रखते हुये 'अध्ययन के गंतव्य के रूप में भारत की पुनः ब्रान्डिंग' के लये रणनीति पेपर तैयार किये गये। जिसका उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थाओं में क्षमता बढ़ाकर, उद्योग केलिये प्रासंगिक शिक्षा को बढ़ावा देने और परम्परागत ज्ञान पद्धतियों की शक्तियों का लाभ उठाकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालय का सृजन करने के लिये कार्य किया गया।

8. आई. एस. तोमर. 2019 द्वारा Study of the awareness among children of ruban schools to use of Library, विषय पर अनुसंधान कार्य पूर्ण किया और अपेक्षित परिणाम प्राप्त किये। शोधकर्ता द्वारा उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों में पुस्तकालय के उपयोग हेतु बेहतर परिणाम देखने में मिले।

शोध प्रविधि–:

यह अध्ययन '' मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में स्थित शासकीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयों में आई.सी.टी. आधारित उपकरण और सुविधाओं का अध्ययन'' के लिए विशिष्ट मेथडोलॉजी का वर्णन करता है। अध्ययन की शुरुआत में, हमनें पूर्व में किए गए अनुसंधान, जानकारी संग्रहण और विषय संबंधित साहित्य की समीक्षा किया। यह हमें विषय में एक मजबूत सिधांतिक आधार स्थापित करनें में मदद करता है ।

शोध हेतु न्यादर्श –:

किसी भी शोध हेतु प्रदत्तों के एकत्रीकरण के न्यादर्शो का प्रतिचयन किया जाना आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में स्थित शासकीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयों में आई.सी.टी. आधारित उपकरण और सुविधाओं का अध्ययन का चयन किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण –:

आई.सी.टी. एकीकरण की महत्वपूर्णताः

यह अध्ययन पुष्टि करता है कि आई.सी.टी. आधारित उपकरण और सुविधाओं का पुस्तकालयों में एकीकरण अध्ययन द्वारा ज्ञात होता है कि यह कैसे छात्रों और शिक्षकों के लिए विशेष संसाधनों और सुविधाओं की उपलब्धता को बढ़ावा देता है।

शिक्षा में नयापन :

आई.सी.टी. तकनीकों के प्रयोग से पुस्तकालयों का भविष्य नए दिशा निर्देशों की आरे बढ़ रहा है। छात्रों को नई तकनीकों का अध्ययन करनें और सीखनें का अवसर मिलता है।

डिजिटल साक्षरता का विकासः

यह अध्ययन दिखाता है कि आई.सी.टी. आधारित उपकरण और सुविधाओं का पुस्तकालयों में उपयोग छात्रों की डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देनें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो उन्हें आज की तकनीकी दुनिया में समर्थ बनाता है।

शिक्षा–संबंधित नवाचार :

आई.सी.टी. उपकरणों के प्रयोग से पुस्तकालयों की शिक्षा–संबंधित सेवाओं में नए नवाचार देखे गए हैं। इससे छात्रों के लिए अधिक उपयोगकर्ता मित्र संसाधनों का विकास हो रहा है, जो उनके शिक्षा के प्रति रुचि को बढ़ावा देते हैं।

सारणी क्रमांक – 1.

जिला सिवनी के शासकीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयो में पुस्तकों जरनल्स न्यूज पेपर मैगजीन ई–लाईब्रेरी अध्ययन ।

क. स.	कालेज का नाम	पुस्तकें	जरनल्स	न्यूज पेपर	मैगजीन	ई–लाईब्रेरी
1.	शा. पी. महाविद्यालय सिवनी	112475	1871	6	5061	हॉ
2.	शा. विधि महाविद्यालय सिवनी	4728	200	2	95	हॉ
3.	शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी	27872	928	10	870	हॉ
4.	शा. महाविद्यालय छपारा सिवनी	25324	–	5	408	हॉ
5.	शा. महाविद्यालय लखनादौन सिवनी	33456	531	10	127	हॉ
6.	शा. महाविद्यालय केवलारी सिवनी	24549	321	6	987	हॉ
7.	शा. महाविद्यालय बरघाट सिवनी	30132	1200	8	2007	हॉ
8.	शा. महाविद्यालय कुरई सिवनी	611	–	1	12	हॉ
9.	शा. महाविद्यालय घंसौर सिवनी	200	–	3	987	हॉ

सारणी क्रमांक – 2

मध्यप्रदेश के सिवनी जिले के शासकीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयो में ई–लाईब्रेरी यूजर्स स्टाफ एवं अध्ययनरत विद्यार्थी ।

क. स.	कालेज का नाम	ई–लाईब्रेरी में पंजीकृत छात्र संख्या	ई–लाईब्रेरी यूजर्स	
			विद्यार्थी	यूजर्स स्टाफ
1.	शा. पी. महाविद्यालय सिवनी	8325	5270	सभी
2.	शा. विधि महाविद्यालय सिवनी	123	57	सभी
3.	शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी	1255	823	सभी
4.	शा. महाविद्यालय छपारा सिवनी	1540	600	सभी
5.	शा. महाविद्यालय लखनादौन सिवनी	4130	2000	सभी
6.	शा. महाविद्यालय केवलारी सिवनी	830	400	सभी
7.	शा. महाविद्यालय बरघाट सिवनी	412	330	सभी
8.	शा. महाविद्यालय कुरई सिवनी	481	318	सभी
9.	शा. महाविद्यालय घंसौर सिवनी	325	215	सभी

सुझावः

मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में स्थित शासकीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयों में आई.सी.टी. आधारित उपकरण और सुविधाओं का अध्ययन केवल शैक्षिक प्रकिया को ही नहीं, बल्कि शिक्षा में नए दिशा निर्देश की आरे एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। इस अध्ययन से हमें विद्यार्थियों की शिक्षा में आरै भी अधिक सुविधा और सामर्थ प्रदान करनें की संभवनाओं का पता लग सकता है। आई.सी.टी. उपकरणों के उपयोग से विद्यार्थी स्वतंत्रता से विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं,। इस अध्ययन से हमें आई.सी.टी. के एकीकरण और सुविधाओं का सही तरीके से उपयोग करनें के लिए और प्रोत्साहन मिल सकता है, जो शैक्षिक प्रकिया को सुदृढ़ और छात्रों को एक उच्च स्तर की शिक्षा प्रदान करनें में मदद कर सकता है।

निष्कर्षः

वर्तमान समय में पुस्तकालय शिक्षण संस्थान का अभिन्न अंग है पुस्तकालय के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति अपने शिष्य की नवीन एवं अधिकांधिक सूचना प्राप्त कर सकता हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग में पुस्तकालय के उपयोगिता के वृद्धि हुई हैं जिसमें डिजिटल पुस्तकालय एवं डाटा केन्द्र के रूप में पुस्तकालय के शिक्षण सामाग्री का प्रयोग अधिकारिक रूप से पूर्ण हुआ है। वर्तमान में भारत सरकार एवं भारत के अधिकतर राज्यों की सरकार लाइब्रेरी के प्रति उपेक्षित व्यवहार रखती हैं, जो कि हमारे देश के विकास की गति को धीमा करने के लिये पर्याप्त हैं। अगर भारत सरकार लाइब्रेरी के महत्व को स्वीकार करने के साथ लाइब्रेरी एण्ड इन्फोरमेशन साइंस के प्रति दिशात्मक कार्य करें तो आने वाला समय देश की प्रगति का होगा। इस अध्ययन के परिणाम स्वरूप, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में स्थित शासकीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयों में आई.सी. टी. आधारित उपकरण और सुविधाएं शैक्षिक प्रकिया में महत्वपूर्ण योगदान कर सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. गुडे, पी. के.,(1962) ″डब्ल्यू0 जे0 एण्ड हैट″, मेथड्स ऑफ रिसर्च, न्यूयार्क, मैकग्राहिल.
2. भट्टाचार्य, एस, (1968) ″फाउन्डेशन ऑफ एजूकेशन एण्ड एजूकेशनल रिसर्च″, बड़ौदा, 1968.
3. अस्थाना, विपिन , (1986) ″मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी″, आगरा–2, विनोद पुस्तक मंदिर.
4. शर्मा पाण्डेय एस0 के0 (1998) पुस्तकालय एवं समाज नई दिल्ली ग्रथ अकादमी।
5. महेन्द्रनाथ (1998) पुस्तकालय और समाज,जयपुर पोइन्टर पब्लिशर्स।
6. सैनी,ओमप्रकाश (1999) ग्रंथालय एवं समाज आगरा बाई. के. पब्लिशर्स।
7. गुप्ता, एस. पी, (2004) ″सांख्यिकीय विधियाँ, विकास एवं समस्याएँ″, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.
8. अली, नौशाद (2005). आई–आई टी दिल्ली पुस्तकालय में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का प्रयोग. आई.ए.एस.आई.सी. बुलेटिन वॉल्यूम 48, (2), पृ.सं. 72–81।
9. लेस्डेस एवं आर्मस्ट्रांग, क्रिस यू. के. क्रिस (2006) ''आर्मस्ट्रांग विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में सूचना साक्षरता की भूमिका का सर्मथन''. जर्नल कैलपरो बुलेटिन, वौल्यूम 58, (6), पृ.सं. 39–69।
10. अहमद, इलहालिज, इब्राहिम, अरब अमीरात (2006) – ''विश्वविद्यालय के उपयोगकर्त्ताओं द्वारा ई–संसाधनों का उपयोग'' : लाइब्रेरी जर्नल एल.आई.आरआई.वी. वॉल्यूम 54. (1) पृ.सं. 18–29 ।
11. महाजन, प्रीति (2007). चण्डीगढ विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में शोधकर्त्ताओं द्वारा इंटरनेट का उपयोग : जर्नल लाईब्रेरी फिलॉसफी एण्ड प्रेक्टिस वॉल्यूम 8, (2), पृ.सं. 15–19
12. झांग, ली, (2011) ''पाठकों के शैक्षिक स्तर अनुशासन एवम् ई–संसाधनों के उद्देश्यों सम्बन्धी कारकों के मध्य सम्बन्ध'': इलेक्ट्रॉनिकस लाईब्रेरी वॉल्यूम 29 (6).
13. झा कुन्दन (2012) छत्तीसगढ़ सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम एक अध्ययन बिलासपुर शा. जमुना प्रसाद वर्मा स्नातो.महाविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़।
14. झा कुन्दन (2014) पुस्तकालय सूचना संप्रेशण का माध्यम शा.नार्गाजुन विज्ञान महाविद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़।